भारतीय संगीत में कवि कालिदास जी का योगदान

डॉ0 गीता शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
संगीत विभाग
जैन कन्या पाठशाला पीजी कॉलेज, मुजफ्फरनगर
ईमेलः*drgeeta24@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 28.05.2025
Approved: 20.06.2025

डॉ0 गीता शर्मा

भारतीय संगीत में कवि कालिदास जी का योगदान

Artistic Narration 2025,
Vol. XVI, No. 1,
Article No.14 pp. 092-096

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-june-2025-vol-xvi-no1
Referred by:
DOI:*https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.014*

सारांश

किसी भी देश की संस्कृति उस देश में मानव निर्मित साधन सामग्री तथा उनमें निर्मित संस्थाओं, विचार–शैली, आस्था और परम्पराओं एवं जीवन मूल्यों आदि का समागम है। कवि अपने भावों द्वारा उस संस्कृति के सार को, सर्वस्व को उसके अंतर्गत स्वरूप में आलोकित करता है। अर्थात कवि ना केवल संस्कृति को निरूपित करता है बल्कि वह अपनी प्रतिभाशाली दृष्टि से देखी हुई सम्पूर्ण सौंदर्य सृष्टि को शब्दों में पिरोते हुए वह अपूर्व प्रतिभा सृष्टि से जन मानस की संस्कृ

ति को अनेक रूपों को अपनी परिकल्पना में संजोए बिना नहीं रह पाता है।

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.014

कवि कालिदास जी की दृष्टि में विकसित परम तत्व का, शाश्वत, सत्य, शिव और सुन्दरता का उसमें तत्कालीन समाज का तथा भारतीय संस्कृति का संगीत का अनुपम समन्व्यय हुआ है। कम शब्दों में अधिक भाव प्रकट कर देने और कथन की स्वाभिकत्ता के लिए कालिदास प्रसिद्ध हैं।1

महाकवि कालिदास विश्व साहित्य इतिहास में एक अविस्मरणीय कवि हैं। वे समग्रता के कवि माने हुए हैं। सौंदर्य के निर्माता हुए हैं। कालिदास जी के पूर्व दो महान कृतियां रामायण और महाभारत इस प्रकार है। जिनमें भारत की संस्कृति के सौंदर्य को दृढ़ रूप से वर्णित किया गया है। वाल्मीकि ऋषि ने संस्कृतियों के बीच के संघर्ष को समीप से जाना है। उन्होंने परिवार, समाज, राज्य, धर्म एवं संस्कृति इन सभी का चिंतन व मनन किया है। उन्होंने जीवन व्यवस्था में पारिवारिक संबंधों की पवित्रता के मूल्य को निरूपित किया है संस्कृतियों के समन्व्य को, संघर्ष को आत्मसात करके उसमें से मानव जीवन में धारक तत्व ग्रहण करना एवं समाज को सही दिशा से अवगत कराया है।

'यतोः धर्मस्ततो जयः'

अर्थात धर्म को श्रेष्ठ मानते हुए जहां धर्म है वहां जय है। महाभारत में समग्र मानव समूह को संबोधित करते हुए वेदव्यास जी ने कहा है कि अर्थ और काम सिंद्व करना भी धर्म के आधार से ही पूर्ण माना जाता है। इससे हमारी संस्कृति की गौरव पूर्ण गाथा परिभाक्षित होती है।2

कालिदास जी की रचनाएं तीन विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध हैं उनमें सौंदर्य की अनुभूति कलात्मकता तथा हमारी प्राचीन परम्परा को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करती है। कालिदास ने मेघदूत और गोदावरी से लेकर उत्तर में हिमालय के अंक में अलका तक के वर्णन में संस्कृति का निरूपण करने का अवसर प्राप्त कर लिया। रघुवंश में रावण वध के पश्चात लंका से पुष्पक विमान उड़ा। उसमें राम दक्षिण सागर से प्रारंभ करके लंका से लेकर गोदावरी तक के प्रदेश सीता को विमान में से दिखाते हुए आते हैं। मेघदूत में उत्तर भारत के प्रदेश दिखाए गये हैं। मेघ का रास्ता थोड़ा लम्बा हो जाने के बावजूद उज्जयिनि को भी दिखाया गया था। किन्तु त्रिवेणी–संगम बहुत दूर रह जाता था। यह संगम स्थान भारत का एक चिरस्थाई भावना केन्द्र है। पुष्पक में से उसका दर्शन चित्रित करने का अवसर कालिदास प्राप्त कर लेते हैं। इस रूप में लंका से हिमालय तक की एक यात्रा पूरी होती है। उल्लेखनीय बात तो यह है कि कालिदास मेघ मे से या विमान में से पृथ्वी के सौंदर्य और संस्कृति का रसपान करने में लगे हैं।

काव्य व संगीत की आत्मा रस है। काव्य में शब्दावली के माध्यम से रस उत्पन्न किया जाता है तथा काव्योत्पन्न यह रस स्वरों की सहायता से चर्मोतकर्श की दशा में लाया जाता है। संगीतकार को भी काव्य ज्ञान होना जरूरी है। प्रत्येक शब्द का महत्व समझकर उसकी उचित योजना संगीत में आवश्यक है। यह कार्य साहित्य व संगीत के मणि कंचन योग से ही हो सकता है।

भारत की भौतिक संस्कृति की रचना के चिरस्थाई स्वरूप और सौंदर्य को कवि कालिदास शब्दों में धारण करते हैं। इंदुमती को उसकी सखी पांडराज का परिचय कराते हुए उनके राज्य में सुपारी के पेड़ से चिपकी हुई नागरबेल और चंदन के पेड़ से चिपकी हुई इलायची लता की तथा तमाल–पुत्रों की शोभा और संस्कृति की बात करती है। रघु विश्वराज के निरूपण में तो कवि संप्रज्ञात रूप से मानों प्रत्येक प्रदेश की विशिष्टता का उल्लेख करते हुए प्रतीत होते हैं। दक्षिण में समुद्र तट के प्रदेशों में ताबुल, नारिकेल, मरीच, इलायची, खजूर आदि, पश्चिम की ओर अनारः कश्मीर की ओर के प्रदेशों में केसर, हिमगिरी प्रदेशों में कस्तूरी, असम मे वहां से होकर यातायात होती फसलें रघुवंश के चौथे सर्ग में संयोगवश निरूपित हुई है।

डॉ0 गीता शर्मा

कवि कालिदास परिवार और राज्य दोनों संस्थाओं की संस्कृति का महत्व बताते हैं। परिवार के बिना समाज का अस्तित्व नहीं है, राज्य के बिना सुरक्षा नहीं है, और सुरक्षा हमारी संस्कृति में है। कालिदास के काव्य में मध्यमाश्रम तपस्वी गृहस्आश्रम में रहकर भी तपस्वी का जीवन जीने वाले हैं। अभिज्ञान शकुंतलम के पांचवे अंक में दुष्यंत और गुनहगार के साथ–साथ एक न्यायाधीश के रूप में भी उल्लेखित किया गया है। उस प्रसंग की 51 उक्तियों के करूण गजग्राह में राजा के बारे में कवि के विचार बहुत उत्कृष्ट हैं। राजा को सिर्फ प्रजा की स्थूल सुरक्षा ही नहीं करनी होती बल्कि इस बात की भी रक्षा करनी होती है कि प्रजा समस्त का सरस्वती स्रोत विलुप्त न हो जाए। अभिज्ञान शकुंतलम के छठे अंक के अंत में कवि ने इसका सार दिया है।3 कालिदास की कल्पना स्वर्ग, हिमालय के अर्ध्वलोक और भूतल सर्वत्र घूम–फिर लेती है। अभिज्ञान शकुंतलम में अहो उदार–रमणीया पृथ्वी और आश्चर्य दर्शनः संलक्षयते मनुष्यलोक जैसे उद्‌गार मानो सूचित करते हैं कि मनुष्य की चेतना पर चारों ओर से जो अनवरत सौन्दर्य वृष्टि होती है, उसे एक जिन्दगी में पूरा गा पाना संभव नहीं है। जब साहित्य और संगीत के उद्‌देश्यों की ओर दृष्टि डालते हैं तो दोनों का ध्येय एक ही मिलता है। प्रत्येक प्राणी के जीवन का उद्‌देश्य आनंद प्राप्त करना है। साहित्य एवं संगीत दोनों ही कलाओं के द्वारा प्राप्त होता है। काव्य और संगीत का संबंध चेतना लोक से होने के कारण इसका मूल रूप भी चेतना की भांति ही अनंत प्रकाशमय ब्रहमा तत्व है।

कालिदास की काव्य सृष्टि में जो भारत है ऐसा भारत कालिदास के समय में भी होगा ही कहा नहीं जा सकता। यद्यपि कालिदास की अमोध प्रतिभा ने अपने समय तक की भारत की संस्कृति की सूक्ष्म सिद्धियों को समझ लिया था। कालिदास ने अपने समय की भावनाओं, आदर्शों तथा स्वपनों में से अपनी निजी कविता का विश्व निर्मित किया है और उसमें भारत की संस्कृति का निष्कर्ष दिया है। हमारी प्राचीन संस्कृति तपोवन संस्कृति है। ये तपोवन विभिन्न ऋषिकुलों के आश्रमों से हरे–भरे थे। कालिदास की कृतियों में उन्नीस ऋषियों और पांच ऋषि आश्रमों का निर्देश मिलता है। कुछ ऋषियों का निर्देश केवल आनुशगिक है। किन्तु वशिष्ठ कण्व, वरतंतु, मारचि, च्यवन और वाल्मीकि ऋषि के आश्रमों के वर्णन में ऋषि सत्ता, यानी भारतीय संस्कृति का ही गान लिया है। समग्रता के कवि कालिदास संगीत का भी उतना ही सूक्ष्म ज्ञान रखते थे। जीवन और देह की सुर–ताल को संगीत ठीक कर सकता है। साहित्य भाव को उभारने और स्पष्ट करने के लिए उसके अनुरूप ही संगितिक रचना होनी चाहिए, वह ऐसी नहीं होनी चाहिए जिससे साहित्यिक सम्प्रेक्षण में कहीं भी आंशिक रूप की कई समूहगान को आलंकृत कर रहे।4 सुविख्यात शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ 86 वर्ष की आयु में गंगा के तट पर बैठने के लिए जाते थे और शहनाई बजाते थे। वे कहते थे कि संगीत सभी धर्मों से ऊपर है। एक इंसान के साथ दूसरे इंसान को संगीत ही जोड़ता है। फॉसीसी उपन्यास्कार बाल्जाक ने एक सूत्र दिया है कि संगीत इंसान की आत्मा की खुराक है। द सीक्रेट पावर ऑफ म्यूजिक पुस्तक के रचयेता डेविड टेइम ने कहा है कि संगीत–चिकित्सा आजकल की नहीं है। चीनी, हिन्दु, फारसी, मिश्र और यूनानी संस्कृति में संगीत का प्रयोग रोगों के उपचार के लिए होता था। हिरोकिलस नामक चिंतक ने संगीत से रोग दूर कर दिए। उन्होंने कहा था कि रक्त प्रवाहिनियां संगीत की लय–ताल से चलती है। इसलिए शरीर, मन (आत्मा) की तालबद्धता कायम रहे तो इंसान स्वस्थ रहता है। वायलन के उस्ताद यहूदी मेन्युहिन ने कहा था कि विश्व में अपराधमुक्त समाज तैयार करना हो तो समस्त बच्चों को संगीत सीखाना चाहिए। बच्चों को कविता–गान, गीत गाने एवं शास्त्रीय नृत्य करने में रसपूरक संलग्न करना चाहिए। इससे संस्कृति वाला

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.014

समाज पैदा होता है। ऐसा लगता है कि यह समझ कालिदास में अनुवांशिक रूप में आई है। संगीत का प्रयोग अन्य संस्कृत नाटककारों के साथ–साथ कालिदास के नाटकों में व्यापक रूप में किया गया है। संस्कृत नाटकों में प्रयोग के समय श्लोक दो तरह से गाये जाते थे। एक तो श्लोक का केवल पठन करना और दूसरा राग–लय–ताल के साथ अच्छी तरह से गायन। विशेषकर प्राकृतगाथा या श्लोक की रचना विस्तारपूर्वक गाने के लिए ही की जाती थी। ऐसे गाने के लिए प्रयोजित प्राकृत पद्य या गाथा कालिदास के तीनों नाटकों में देखने को मिलती है। जैसे कि अभिज्ञान शाकुतलम् के प्रारंभ में श्रोताओं को शांत एवं एकाग्र करने के उद्देश्य से नांदी के मुंख से संगीत का पद्य कहलवाया गया है। नांदी के रूप में संस्कृत नाटकों में संगीत का प्रयोग किया जाता था।5 किन्तु संगीत प्रेमी कालिदास को इतने से ही संतोष नहीं हुआ। उन्होंने तो अपने नाटकों में नांदी के अतिरिक्त अन्यत्र की यहां–वहां संगीत का प्रयोग किया है और इसलिए ही अभिज्ञान शकुतलम् की प्रस्तावना में भी सूत्रधार के आग्रह पर नांदी ग्रीष्म ऋतु के चित्रण का एक पद्य गाती है। प्राकृत गाथा का केवल पठन करना नहीं, अपितु लय–ताल आदि के द्वारा मुक्त रूप से राग विस्तार करना 'इति गायती' शब्दों से कालिदास यह सूचना देते हैं। अहो रागबद्ध चित्तवृति आलिखित इच सर्वतो रंगः अर्थात राग के माधुर्य से हृदय आकर्षित होने से श्रोता चित्रलिखित से निश्चल बैठे रहते हैं। नांदी द्वारा गाए हुए चपल सारंग राग के चपल स्वरूप की भी सूचना श्लेष द्वारा देते हुए कहा गया है।

तवास्मिगीत रागेण हारिणा प्रसंग हतः
एश राजेव दुष्यंतः सारंगेणातिरंहसा।

इस श्लोक का दो रूपों में अर्थ–घटन हो सकता है। एक तो मुख्य नायक का चरित्र मंच पर आने से पहले उसका नाम–निर्देश के साथ सूचन करना। नाट्यशास्त्र का नियम भी है ''नासूचितपात्रं प्रवेशयेत् इसके मुताबिक अत्यंत वेगवान मृग के पीछे पड़ा दुष्यंत अब प्रवेश करता है। और दूसरी बात यह भी कही गयी है कि नांदी द्वारा गाये हुए पद्य का राग सारंग था और यह राग चपल प्रवृत्ति का है। इस प्रकार नांदी के सिवा अन्यत्र भी कालिदास ने संगीत का सुंदर वातावरण निर्मित किया है।6 ऐसे ही तीसरे अंक में शकुंतला का दुष्यंत को लिखा गया प्रेमपत्र भी प्राकृत गाथा में रचा गया है और वह भी गाने के लिए ही रचा गया होगा। इसके बाद चौथे अंक में भी वन देवता शकुंतला को जो उद्देश्य रूप से आशीर्वाद देते हैं, उसमें भी संगीत का पूर्णतया अवकाश है। रम्यंतर कमलिनी श्लोक पर्दे के पीछे से गाया जाता है। पर उसे सुनने के बाद सब चकित हो जाते हैं। इसका उल्लेख कालिदास ने किया है।7 आगे चलकर पांचवे अंक के प्रारम्भ में हंसपदिका एक गीत गाती है। और वह गीत अत्यंत विस्तृत रूप से गाती है। यह कालिदास स्पष्ट रूप से बताते हैं। जाते तत्रलवती हंस पादिका वर्ण परिचय करोतिं वर्ण परिचय का अर्थ वर्तमान भाषा में गीत का प्रारंभ करने से पहले संगीतकार द्वारा ताल मिलाने के लिए किया जाने वाला रिवाज होता है। इसलिए हंसपादिका का गीत विस्तृत रूप में स्वर लय ताल आदि के साथ होता था। कालिदाास यह सूचित करते हैं कि हंसपादिका ने इस तरह रियाज करने के बाद 'अहिणवमत' अपश्वक्तृ वृत में रचित गीत गाया और वह इतना ज्यादा दर्द भरा और इतना ज्यादा मधुर था कि दुष्यंत के मन पर उसका अधिक प्रभाव पड़ा और वह कहने लगा 'अहो राग परिवाक्षिणी गीति'। भाव से छलकता हुआ यह कैसा गीत। उसके बाद दुष्यंत के मन पर इस गीत का सूक्ष्म और गहरा प्रभाव पड़ा और वह कहने लगा, 'अहो राग परिवाहिणी गीति'। हंसपादिका का भाव संसार संगीत सुनकर उसका हृदय बेचैन हुआ ही पर उसके साथ उस नाटक के प्रयोग के समय सभी रसिक श्रोताओं की

चित्त वृत्ति को मुग्ध कर देने के लिए भी था।8 मालविकाग्निमित्रम नाटक के दूसरे अंक में मालविका के नृत्य और मोहन मन से तथा उसके सुमधुर संगीत से राजा अग्निमित्र की चित्तवृत्ति वैसी ही मुग्द हो गई जैसे महाराज कृष्णमार सिंह जी प्राकृतिक संगीत सुनने के लिए गोपीनाथ के सागर तट पर चले जाते थे और इसी तरह श्रोताओं एवं प्रेक्षकों की भी ऐसी ही स्थिति हुई होगी। गपदास के 'अद्यनर्तपितास्मि' शब्दों से इसका पता चलता है। मालविकाग्निमित्रम के दूसरे अंक में आए संगीतमय प्रसंग से भी पता चलता है कि कालिदास का संगीत के साथ कितना दृढ़ रिश्ता था स्पष्ट है कि कालिदास कितने संगीत प्रेमी थे और संगीतरसज्ञ श्रोताओं की चित्तवृत्ति एकाग्र करने के लिए ये नाट्य प्रयोग में संगीत का कैसा सामंजस्य करते थे। नाटककार होमर ने अपने सुप्रसिद्ध नाटक इलियड में लिखा है कि सूर्य देवता ने शास्त्रीय श्लोकों की मधुर ध्वनि सुनकर प्रसन्न होकर प्लेग के रोग को फैलाने से रोक दिया था तो फिर इंसान तो आनंदित होगा ही है। वास्तव मे कवि कालिदास जी का भारतीय संगीत में अतुलनीय योगदान रहा है।

संदर्भः–

1. बालूराम शास्त्री अप्रैल 2017 पृष्ठ– **12, 50**
2. रधुवंश महाकाव्य कालिदास पृष्ठ– **118**
3. अभिज्ञान शकुन्तलम अशोक कौशिक पृष्ठ– **84**
4. भारतीय संगीत के मूलाधार (सुधा श्रिवास्तव) पृष्ठ– **14,15**
5. संस्कृत साहित्य का गंभीर इतिहास (रामजी उपाध्याय)
6. अभिज्ञान शकुन्तलम अशोक कौशिक पृष्ठ– **45** से **56**
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास (उमाशंकर शर्मा) पृष्ठ– **202**
8. कालिदास और उनका मानव साहित्य–2 (अच्युतानंद धिल्जियाल, गोदावरी धिल्जियाल)।